अध्याय बाईसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"त्रिगुणों पर जय पाने वाले, निर्गुण रूप में स्थित तथा सभी के साथ एक समान व्यवहार करने वाले, हृदय में स्थित अज्ञान के अंधेरे का विनाश करने वाले, अनगिनत सद्गुण होने के बावजूद भी निर्मल होने वाले हे सर्वोत्तम ईश्वर, हे सिद्धारूढ़जी, आप मेरे जगदीश तथा मेरे ईश्वर हैं; आप की जयजयकार हो।"

सतगुरुजी के मुँह से निकले हुए वचन सुनने से मुक्ति प्राप्त होती है; इस बात पर अगर कोई अविश्वास करता है, तो उसे अन्य कोई भी पार नहीं लगा सकता। सतगुरुजी का कहना हैं की पापकर्मों का त्याग करके पुण्यदायक धर्म का स्वीकार करें, सत्संग के प्रति आस्था रखते हुए प्रतिदिन ईश्वर का भजन करें। त्रिगुणों को स्वयं पर हावी न होने देते हुए भूतदया (प्राणियों पर दया दिखाना) मन में रखते हुए सतगुरुजी की प्रेम से पूजा करें। अन्य जनों के दोषों की चर्चा न करें, जगत में मनमाना व्यवहार न करें, दूसरोंका मर्मभेद न करें तथा कामक्रोध जैसे दुर्गुणों पर जय पाएँ। सांसारिक (घरेलू) व्यवहारों के प्रति अनास्था दिखाएँ, भ्रम भरे संसार की ओर ध्यान न दें, संकटों से भयभीत न होते हुए प्रेम से गुरुचरणों की शरण में जाएँ। धनप्राप्ति होने से घमंड न करें और जिस विचार से माया का निराकरण होगा उसी को मन में स्थिर करें। अन्य लोगों के साथ व्यवहार तथा भाषण करते समय अव्दैत तत्व का बयान न करें परंतु हमेशा हृदय में अव्दैतभाव को स्थापित करें। देश तथा समय (योग्य या अयोग्य) के अनुसार वेदों में दिए हुए विधियों के अनुसार आचरण करें तथा ईश्वरभक्ति के अलावा अन्य व्यवहार न करें। "मैं कौन हूँ" इस बात पर अंत:करण में हमेशा सोचते रहें तथा यह लौकिक जगत का फैलाव केवल एक सपने के समान मिथ्या या कल्पित है ऐसा समझें। मदन (रति का पति) का विनाश करने वाले भगवान शिवजी को संतुष्ट करके अक्षय सुख का स्थान (मोक्ष) प्राप्त कर लें। इस प्रकार का सद्बोध मन में रखते हुए जो इस संसार में

व्यवहार करता है उसका भवबंधन तोड़कर सतगुरुजी उसे मुक्त करते हैं। अमृत से भी अधिक मधुर ऐसी सिद्धारूढ़जी की कथा अब सुनिए।

सिद्धनाथजी जब हुबली में सिद्धाश्रम में निवास करते थे, तब अन्य गाँव के उनके भक्त समारोह के लिए हुबली आते थे। समारोह के समाप्ती के पश्चात अपने अपने गाँव लौटने के बाद समारोह की मधुर स्मृति को मन में रखते हुए सोचते की ऐसा ही समारोह उनके अपने गाँव में भी मनाया जाए, जिस में सिद्धारूढ़जी को आमंत्रित करके उनके चरणों की सेवा करके धन्यता प्राप्त की जाए। एक बार अन्य गाँव के कुछ सज्जन मुरकीभावी नाम के गाँव में इकट्ठा हुए और उन्होंने सतगुरुजी की पूजा करने की तैयारी करके उन्हें पूजा स्वीकार करने की बिनती की। उन्होंने कहा, "महाराज, जिस प्रकार महाशिवरात्री के दिन हुबली में समारोह मनाया जाता है, उसी प्रकार का समारोह हम अपने गाँव में मनाना चाहते हैं, अगर आप आज्ञा करें तो हम आप को सिंहासन पर बिठाकर आप की पूजा करने का विचार कर रहे हैं।" उसपर सिद्धजी ने कहा, "हम हुबली छोड़कर नहीं जाएँगे। क्योंकि, जो लोग प्रतिदिन हमारे दर्शन के लिए सिद्धाश्रम आते हैं, वे निराश हो जाएँगे। जहाँ आप भजन अथवा ब्रह्म की खोज करने वाले वेदों का श्रवण करेंगे वहीं सतगुरुजी निश्चित ही उपस्थित हैं ऐसा समझकर कार्‌य आरंभ कीजिए।" यह सुनकर भक्त हर्षित हुए, उसपर उन्होंने सतगुरुजी का चित्र मँडवे में पूजा के लिए स्थापित किया तथा सिद्धारूढ़जी के शिष्य रामय्यास्वामी को सतगुरुजी की पूजा करने के लिए मुरकीभावी ले गए। इस से पूर्व मुरकीभावी के भक्तों ने समारोह के दिन स्वयं सिद्धारूढ़ स्वामीजी पूजा स्वीकार करने आएँगे ऐसी खबर आमंत्रण पत्रिकाओं में छपवाकर लोगोंतक पहुँचाई थी। परंतु आम भक्तों को सिद्धारूढ़जी हुबली छोड़कर कहीं भी नहीं जाते इस बात की पूरी जानकारी होने के कारण, आमंत्रण पत्रिका देखकर कोई चमत्कार होने की संभावना होगी ऐसा सोचकर वे वहाँ इकट्ठा हुए। अपार जनता के लिए भोजन की व्यवस्था करने हेतु सारा सामान इकट्ठा किया गया था। एक बड़े मैदान में एक भव्य तंबू गाड़ा था जिस में एक मँडवे की रचना की गयी थी तथा उस में रखे सिंहासन पर सतगुरुजी का चित्र स्थापित किया था। एक सप्ताह तक समारोह चल रहा था, उन दिनों में दिनरात भजन होता था तथा

प्रतिदिन दो बार कीर्तन हुआ करता था। दूर दूर के राज्यों से अनेक साधु संत वहाँ आकर वेदांत पर चर्चा करते रहने के कारण वह स्थान मानो कैलास ही है ऐसा प्रतीत होता था। दोपहर तथा रात को सभी को भोजन देकर तृप्त किया जाता था। सप्ताह के सातों दिन शाम के समय दिये जलने के पश्चात भक्तगण मँडवे में सिंहासन पर रखे सतगुरुजी के चित्र को वस्त्रालंकारों से सजाते थे। उसपर भक्तगण उस चित्र की आरती उतारते थे, उस समय सैंकडों लोग वह समारोह आनंद से देखते थे तथा सतगुरुजी की जयजयकार करते थे। इस बार समारोह के लिए इकट्ठा हुए लोगों ने कहा की आमंत्रण पत्रिकाओं में स्वयं सिद्धारूढ़जी यहाँ उपस्थित होने की वार्ता छपी थी, परंतु किसी ने भी सतगुरुजी को यहाँ देखा नहीं; इसका अर्थ यह हुआ की आमंत्रण पत्रिकाओं में आप ने झूठा विधान छपवाया। कुछ श्रद्धालु लोगों ने कहा की समारोह के आखिर के दिन स्वामीजी आएँगे ऐसा सुनने के कारण वे समारोह के अंतिम दिन तक वहाँ रुके हुए थे। प्रतिदिन सतगुरुजी के चित्र की पूजा होती थी परंतु सातवे दिन सतगुरुजी आएँगे ऐसा समझकर अनगिनत लोग वहाँ उपस्थित हुए थे। हालाँकि अनगिनत लोग वहाँ इकट्ठा हुए थे, किसी ने भी स्वामीजी को देखा नहीं था; इतने में रामय्यास्वामीजी पूजा करने हेतु आगे बढ़े। स्वामीजी का चित्र परदे में रखकर उसे सजाते समय भक्तगणों को स्वयं स्वामीजी वहाँ उपस्थित न होने के कारण बड़ी चिंता हो रही थी। पूजा संपन्न होने के पश्चात रामय्यास्वामीजी ने अनन्य होकर सिद्धारूढ़जी से प्रार्थना की, "सतगुरुनाथजी की जय हो, हे भक्तसखा, इस संकट के समय हमारी मदद करें। आप के दर्शन हेतु यहाँ अनगिनत लोग उपस्थित हुए हैं। इसलिए यहाँ प्रकट होकर आप हमारी लाज रख लीजिए। हम अपने आप को आप के भक्त कहलवाते हैं और आप के यहाँ स्वयं उपस्थित होने की वार्ता लोगों में फैल चुकी होने के कारण आप के न आने से लोग हम पर हँसेंगे। हे भगवान, मैं अपने हित के लिए आप से विषयोपभोग नहीं माँग रहा हूँ, जो शायद आप मुझे दे भी देंगे। परंतु जनहित के लिए आप अवश्य यहाँ उपस्थित हो जाईए। आज आप के दर्शन होते ही भक्तगण अति आनंदित हो जाएँगे और उनकी आप के प्रति श्रद्धा और भी बढेगी, इसी विचार से हम आप को यहाँ बुला रहें हैं। सतगुरुजी के प्रति

भक्तिभाव का फैलाव हो, अज्ञानी लोगों का उद्धार हो तथा यह मृत्युलोक पावन हो इसीलिए आपने यह अवतार धारण किया हैं। यह समारोह भी इसी हेतु से मनाया जा रहा है और आप के दर्शन के लिए हजारों लोग यहाँ उपस्थित हुए हैं; इसलिए अगर आप इस समय उन्हें दर्शन देंगे तो यह समारोह सार्थक हो जाएगा। अगर आप मेरी प्रार्थना नहीं सुनेंगे तो हमने भक्तों को दिया हुआ वचन झूठा साबित होगा, उसके पश्चात कौन हमारी बातों पर विश्वास करेगा? आप ही हमारी लाज रखिए।" इस प्रकार सतगुरुजी की प्रार्थना करके उन्होंने सतगुरुजी की जयजयकार करते हुए जब परदा खोला तब अनगिनत लोगों की आँखे परदे के परे स्थित दृश्य पर टिकी हुई थी। उस पल लोगों ने वहाँ क्या देखा? सभी अलंकारों से सजे तथा चेहरे पर अनुपम तेज होने वाले सतगुरुजी को वहाँ प्रत्यक्ष देखकर लोगों के आश्चर्य की कोई सीमा ही नहीं रही। उन्हें देखते ही लोगों में उमंग की ऐसी लहर फैली जैसे की मानो ज्वार में उमड़ने वाला सागर हो या वर्षाऋतु में अंबर में छाये हुए घने बादल हो! उस समय वहाँ फैले आनंद का बयान करना नामुमकिन था। सिद्धनाथजी को वहाँ प्रकट हुआ पाकर लोग हर्षोल्लास से नाच उठे। लोग कहने लगे, "आज सचमुच में ही हम धन्य हो गये। सिद्धसतगुरुजी सर्वव्याप्त हैं इसकी आज हमें प्रतीति हुई। अब हमें अन्य किसी भगवान के पास जाने की क्या आवश्यकता हैं? सिद्धारूढ़जी में ही सभी देवों के दर्शन होने के प्रति अज्ञानी होने के कारण आजतक हम दर दर भटकते रहें! सभी के मन हर्षित हो गये और उनके अंत:करणों में सतगुरुमूर्ति स्थिर हो गयी। तत्काल सिद्धनाथजी अंतर्धान हो गये और समारोह की उत्तम रीति से पूर्ति हो गयी। इस प्रकार जनहित, भक्तोद्धार तथा भक्तों के अभिमान की रक्षा करने हेतु सतगुरुजी को अवतार धारण करना पड़ता है। ऐसी यह परमपवित्र कहानी अगर श्रोतागण ध्यान से सुनेंगे तो सतगुरुनाथजी उनके दुर्धर भवपाश भी तोड़ देंगे।

अब इस कथा का तात्पर्य यानी उसमें प्रकट हुए पारमार्थिक विचार की श्रोतागण ध्यान दें। परमार्थ के मार्ग पर चलने वाले सभी उपासकों की हमेशा कामना होती हैं की वे परब्रह्म (यानी परमात्मा) का प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करें या उसकी उन्हें साक्षात भेंट हो, इसीलिए वे हमेशा सतगुरुजी से प्रार्थना करते हैं

तथा सतगुरुजी उनकी कामना पूरी करते हैं। सतगुरुजी के प्रत्यक्ष रूप में दर्शन होना इसी को साक्षात्कार कहते है। मन ही मन स्वयं की आत्मा तथा सतगुरुजी इन दोनों में होने वाली एकरूपता का ज्ञान होना इसी को अपरोक्ष साक्षात्कार कहते है। क्योंकि सतगुरुजी मूलत: निर्गुण ब्रह्म हैं, परंतु भक्तों को वे सगुण रूप में दिखाई पड़ते हैं; जिस प्रकार बरफ तथा पानी ये दोनों एक ही हैं, उसी प्रकार सगुण तथा निर्गुण ब्रह्म को एकरूप ही समझें। कुछ लोग कहते हैं की सिद्धारूढ़जी के दर्शन होते ही, क्यों न ज्ञान प्राप्ति हो? परंतु जो लोग स्वयं तथा अन्यों में और स्वयं को छोड़कर अन्यों में व्दैत देखते है उन्हें कभी भी ज्ञान प्राप्ति नहीं होती। मन में सभी के प्रति एकरूपता की भावना (एक ही ब्रह्म सभीं में होने की भावना) निर्माण हुए बिना कभी भी आत्मज्ञान प्राप्ति नहीं होती और आत्मज्ञान के बिना कल्पांत (प्रलय काल तक) तक भी भवपाश टूटते नहीं। श्रोतागण, अब अगले अध्याय में दी हुई सुरस कथा सुनने के लिए तैयार हो जाए, जिससे गुरुकृपाप्राप्ति होकर कलियुग के पापों का विनाश होगा। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुरसा यह बाईसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥